दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के अडतीसवें दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीय कुलाधिपति महोदया का उद्‌बोधन

आज के दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि प्रो0 डी0 पी0 सिंह जी, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो विजय कृष्ण सिंह जी, कार्यपरिषद एवं विद्यापरिषद के सदस्यगण, विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारीगण, छात्र एवं छात्राएं, सम्मानित अतिथिगण एवं पत्रकार बंधुओं।

इस समारोह में आपके साथ सम्मिलित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अंचल का एक विशिष्ट महत्व है। यह एक ऐसा विलक्षण अंचल है, जिसे एक साथ भगवान बुद्ध, गुरु गोरक्षनाथ, संत कबीर और विश्वप्रसिद्ध गीता प्रेस के पुण्य श्लोक, आदरणीय हनुमान प्रसाद पोद्दार और कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के कर्मक्षेत्र होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। यह विश्व को गणतंत्र देने वाला अंचल भी है और चौरीचौरा तथा 'बिस्मिल' जैसे स्वाधीनता के पुण्य प्रतीकों वाला अंचल भी है।

इस विश्वविद्यालय के साथ हमारे युग के प्रखर राजनीतिक चिन्तक और एकात्म मानववाद के प्रणेता परम आदरणीय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की पावन स्मृति भी सम्बद्ध है। वे अत्यंत उच्च कोटि के राजनेता और दार्शनिक विचारक थे जिन्होंने इस बात पर बल दिया कि देश की आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था भारतीय संस्कृति की बुनियाद पर ही निर्धारित और नियोजित होनी चाहिए।

इतने विशिष्ट संयोगों वाले इस अंचल और इस परिसर में आना मेरे लिए सचमुच आह्लादकारी है और सुखद है।

यह प्रसन्नता का विषय है कि इस अवसर पर हमारे बीच मुख्य अतिथि के रूप में प्रो0 डी0 पी0 सिंह जैसे विद्वान उपस्थित हैं, जो विगत अनेक वर्षों से उच्च शिक्षा से जुड़े महत्वपूर्ण संस्थानों और निकायों के सर्वोच्च पदों पर अपनी सेवाएँ दे चुके हैं और सम्प्रति देश में उच्च शिक्षा की शीर्ष नियामक संस्था विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।

दीक्षांत समारोह जैसा आयोजन उच्च शिक्षा के सर्वाधिक प्रतिष्ठापरक पर्व जैसा होता है। इस अवसर पर आपने ऐसे अनुभवी और समर्थ व्यक्तित्व को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया इसके लिए मैं आप सबको बधाई देती हूँ और प्रो0 सिंह को भी उनके दीक्षांत उद्बोधन के लिए बधाई देती हूँ। उन्होंने हमारे उपाधि धारक विद्यार्थियों के लिए जो उद्बोधन प्रस्तुत किया है वह निश्चित रूप से सभी के लिए प्रेरक और मार्गदर्शक सिद्ध होगा, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है।

आज हमारे बीच दर्शक दीर्घा में नन्हें विद्यार्थी और समाज कार्यों में अपना योगदान करने वाले स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधियों का भी मैं स्वागत करती हूँ।

ऐसे आयोजनों में इनकी उपस्थिति पहली बार है इसलिए स्वाभाविक रूप से आपके मन में इनकी उपस्थिति के कारण को लेकर जिज्ञासा हो सकती है। मैं आपकी जिज्ञासाओं का उत्तर देती हूँ।

इन नन्हे विद्यार्थियों और इन कर्मयोगियों की उपस्थिति एक प्रतीकात्मक आग्रह के निमित्त है। ये स्वयंसेवी कर्मयोगी वर्तमान भारत की आवश्यकताओं को पूरा करने के एक अभिनव विकल्प के प्रतीक हैं और ये नौनिहाल भविष्य के भारत का चेहरा हैं।

आप सब जिन्हें आज उपाधियाँ प्राप्त हो रही हैं या वे जो इस शिक्षा–यज्ञ में किसी न किसी भूमिका में हैं, उन्हें अपने लक्ष्यों का चयन करते हुए, अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए इन प्रतीकों का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। हमारा योगदान वर्तमान भारत की जरूरतों को पूरा करे और भविष्य के भारत की निर्मिति में सहायता करे, यही हमारा उद्देश्य होना चाहिए।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय आजादी के बाद स्थापित होने वाला प्रदेश का पहला विश्वविद्यालय होने के कारण एक विशिष्ट प्रतिष्ठा रखता है। अनेक सुप्रसिद्ध साहित्यकार, प्रतिभाशाली वैज्ञानिक, श्रेष्ठ अध्यापक, प्रशासनिक अधिकारी और राजनेता इस विश्वविद्यालय की कक्षाओं से पढ़कर निकले हैं जिनमें से कई आज भी देश के महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। किसी भी विश्वविद्यालय के लिए ऐसे विद्यार्थी ही गौरव के सबसे बड़े पदक और प्रमाण–पत्र होते हैं।

कुलपति जी ने अभी विश्वविद्यालय का जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया उससे इस बात की आश्वस्ति होती है कि यह विश्वविद्यालय अपने योग्य अध्यापकों, प्रतिभाशाली विद्यार्थियों और परिश्रमी कर्मचारियों के समन्वित प्रयासों से एक उत्कृष्ट शिक्षा केंद्र के रूप में अभी भी उसी गति से प्रगति कर रहा है।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि इस विश्वविद्यालय ने लगातार पठन–पाठन, परीक्षा और परिणाम की घोषणा के मामले में एक समयबद्ध प्रदर्शन किया है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि इस विश्वविद्यालय ने अपनी प्रवेश परीक्षाओं में पारदर्शिता का एक अच्छा प्रयोग करते हुए ऑनलाइन प्रवेश परीक्षाएं आयोजित की हैं और ऐसी उपलब्धि अर्जित करने वाला यह प्रथम राज्य विश्वविद्यालय है। पारदर्शिता बहुत जरुरी है और यह प्रत्येक क्षेत्र में अनुकरणीय है।

एक सौ शोध अध्येताओं को मेरिट स्कालरशिप देने के निर्णय और परिसर में गुरुश्री गोरक्षनाथ शोधपीठ तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ की सक्रियता बहुत आश्वस्तकारी है। परिसर में स्वच्छता और सुन्दरता के लिए आपके प्रयासों की मैं सराहना करती हूँ तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों, खेल और राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों के सतत आयोजन और श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए भी आप सभी को बधाई देती हूँ।

जवाबदेही हर स्तर पर सुनिश्चित की जानी चाहिए क्योंकि यह उत्कृष्टता हासिल करने के लिए एक जरुरी शर्त है। हम जिस समय में रह रहे हैं वहां उत्कृष्टता किसी भी संस्था के लिए अपरिहार्य है। श्रेष्ठता के अभाव में हमारा अस्तित्व चुनौतियों से घिरता जायेगा।

हम हमेशा गर्व से स्मरण करते हैं कि दुनिया का पहला विश्वविद्यालय भारत में ही 700 ईसा पूर्व तक्षशिला में स्थापित हुआ था, जिसमें दुनिया भर के 10500 विद्यार्थी 60 विषयों की शिक्षा लेते थे। आज संख्या की दृष्टि से देखा जाए तो भारत की उच्चतर शिक्षा व्यवस्था अमरीका और चीन के बाद

तीसरे नंबर पर आती है लेकिन गुणवत्ता के मामले में हम बहुत अच्छी प्रगति नहीं कर सके हैं।

यह दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे विश्वविद्यालय विश्व के सर्वश्रेष्ठ परिसरों की सूची में स्थान नहीं बना पा रहे। किन्तु श्रेष्ठता और उत्कृष्टता के प्रति हमारा आग्रह और समर्पण इस स्थिति को बदल सकता है।

अगर पिछले सात–आठ सौ वर्षों का इतिहास पलटिए, तो लगता है कि जो समाज खोज करने में, इनोवेट करने में आगे रहा, उसी ने दुनिया की रहनुमाई की है। उन खोजों में खास तौर से ऊर्जा सबसे महत्वपूर्ण रहा है। माना जाता है कि कोयले की खोज, कोयले के उपयोग, कोयले से ऊर्जा बनाने की तकनीक ने ब्रिटेन को दुनिया की महाशक्ति बना दिया। सैकड़ों साल तक उसके राज्य में सूर्यास्त नहीं हुआ। ब्रिटिश साम्राज्य खड़ा हो गया।

उसी तरह दूसरे विश्वयुद्ध के आसपास पेट्रोल उत्पादन करनेवाले क्षेत्रों पर प्रभुत्व जमा कर या उसे अपने असर में लाकर, अमेरिका दुनिया की बड़ी ताकत बन गया। अब पुनः माना जाता है कि जो देश ऊर्जा के परंपरागत स्रोतों को छोड़ कर यानी पेट्रोल और कोयला छोड़ कर नयी तकनीक खोजेंगे, वे दुनिया की नयी महाशक्ति होंगे। आज अमेरिका में बड़ी बहस चल रही है कि अमेरिका अपने सुपरपावर का यह खिताब, यह आभा कैसे और कब तक कायम रख सकता है? उसके जो भी विश्वविद्यालय संस्थान या शोध केंद्र हैं, वे लगातार नयी खोज में लगे हैं।

भारत भी नयी खोज की बदौलत ही दुनिया में स्वयं को पुनर्प्रतिष्ठित कर सकेगा। यह सही भी है, क्योंकि वे शिक्षण संस्थान, जिनमें मौलिक

चीजों का शोध होता है, वे ही दुनिया को राह दिखाते हैं। मसलन, सिलिकन वैली। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में जितने अध्ययन या प्रयोग कंप्यूटर को लेकर व अन्य चीजों को लेकर हुए, उससे इंटरनेट इकॉनमी का जन्म या नयी तकनीक का जन्म या नयी मशीनों का जन्म हुआ, जो दुनिया के इनसानों व समाज को गहराई से प्रभावित कर रहे हैं। वहां के विश्वविद्यालय आसपास के उद्योगों से जुड़ कर, उनके विकास के केंद्र बन गये हैं। हब बन गये हैं।

क्या हमारे विश्वविद्यालय इस राह चलेंगे? हम चाहते हैं कि हमारे विश्वविद्यालय इस राह पर चलें। इसीलिए हमने सभी राज्य विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से कहा है कि वे अपने यहाँ मौलिक, समाजोपयोगी और क्षेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले अनुसंधानों को बढ़ावा दें। यदि हम ऐसा कर सके तभी हम अपनी सार्थकता सिद्ध कर सकेंगे।

जरुरत सिर्फ इस बात की है कि हमारे शिक्षक, हमारे विद्यार्थी, हमारे कर्मचारी– हम सभी अपने इसी दायित्व का आभास करें और स्वयं को समाज और राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित कर दें।

इन दायित्वों के विषय में बताते हुए गुरुदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा है कि–

"सभी देशों की शिक्षा के साथ देश की सर्वांगीण जीवन धारा का गहरा सम्बन्ध रहता है। पर हमारे देश की शिक्षा का सम्बन्ध केवल शिक्षित समाज के कुछ व्यवसायों जैसे डाक्टरी, वकालत, मास्टर या क्लर्क आदि से है। जहाँ हल चल रहे हैं, कोल्हू चल रहे हैं, कुम्हार के चाक घूम रहे हैं वहां तक हमारी शिक्षा न तो खुद पहुँच पाती है न कोई फायदा पहुंचा पाती है।

हमारे विश्वविद्यालयों की जड़ें भूमि में न होकर पेड़ पौधों पर अमरबेल की तरह लटक रही हैं। भारत के लिए सार्थक विश्वविद्यालय वही होंगे जहाँ दी गयी ज्ञान, विज्ञान, कृषि और अर्थशास्त्र आदि की शिक्षा आसपास के गाँवों के व्यावहारिक और वास्तविक उपयोग में आ सके। तभी ऐसे विश्वविद्यालय अपने होने की सार्थकता प्रमाणित कर पायेंगे।"

यह विश्वविद्यालय जिनकी पुण्य स्मृति में कार्यशील है वे श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी भी कहा करते थे कि–

"हमें अपने राष्ट्र के विरत को जागृत करने का काम करना है। अपने प्राचीन के प्रति गौरव का भाव लेकर, वर्तमान का यथार्थवादी आकलन करके और भविष्य की महत्वाकांक्षा लेकर हम इस कार्य में जुट जाएँ।"

मैं आप सबसे आह्वान करती हूँ कि हम सभी उनके इस विचार सूत्र को जीवन मन्त्र मानकर अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसर हों। यही हमारी तरफ से उनके प्रति सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि होगी।

मित्रों! आज हमारे बीच छोटे–छोटे बच्चे आये हैं। आज आप सभी का दीक्षान्त समारोह तो हुआ ही, मैं कहती हूँ कि इन तीस बच्चों का भी दीक्षान्त समारोह आज हो गया है। इनसे बातचीत में पता चलता है कि ये भी चाहते हैं कि हम ऐसा पढ़ें जिससे आगे चलकर, यूनिवर्सिटी में आकर हमें भी गोल्ड मेडल मिले।

यूनिवर्सिटी की ओर से बच्चों को अच्छी–अच्छी किताबें और उपहार दिये गये हैं। मैं इन बच्चों की टीचर्स से अनुरोध करती हूँ कि इन 30

किताबों को आप अपनी लाइब्रेरी में रखिये। बच्चे उसे पढ़ें, उस पर चर्चा करें। ऐसा हो सका तो ये बच्चे सबके सामने अपने विचार रख सकेंगे, बोल सकेंगे और पढ़ने में रुचि बढ़ेगी तो जहाँ अच्छी लाइब्रेरी मिलेगी, वहाँ से किताबें लेंगे और अपने घर ले जाकर पढ़ेंगे। यह आदत अभी से डालनी जरूरी है।

मित्रों! मैं वर्षों से सोशल वर्क करती रही हूँ। चार–पांच दिन पहले मैंने किसी समाचार पत्र में एक समाचार पढ़ा। कुछ कालेज तक पहुंचे छात्र–छात्राओं ने अपने परिवारीजनों से कहा कि आपने तो हमारा विवाह बचपन में कर दिया था, यह हमें स्वीकार नहीं है। माता–पिता ने उनकी बात मानी और स्वीकार किया कि उन्होंने भी सामाजिक दबाव में इस कुरीति के चलते बाल–विवाह कर दिये। अच्छी बात यह रही कि सबने मिलकर अपने–अपने बच्चों के पूर्व में हुए बाल–विवाह को भंग करते हुए उन्हें इससे मुक्ति दिला दी।

मैं मानती हूँ कि ऐसा ही होना चाहिए। माता–पिता का काम बाल–विवाह कराना नहीं है। बच्चों को अच्छा संस्कार देना, पढ़ाना–लिखाना, आगे बढ़ाना, यह माता–पिता का कर्त्तव्य है। आगे बड़े होकर कहाँ विवाह करना है, किसके साथ करना है, यह वे तय करें। हम क्यों करते हैं? हमारा पहला कर्त्तव्य तो यह है कि जन्म से उसे अच्छे संस्कार दें। वह झूठ न बोले, सच बोले, चोरी न करे, सेवाभाव रखे। स्कूल में पढ़े, लाइब्रेरी में जाये। इन सब बातों की सलाह दी जाये, मार्गदर्शन किया जाये। यह नहीं कि बेटी 18 साल की हुई नही तो तय कर दिया। अरे बेटा, बड़ा घर है, बंगला है, दो

गाड़ियां हैं, उसके साथ विवाह कर लो और विवाह कर दिया। अब वहां बाप शराब पीता है, बीड़ी–सिगरेट पीता है, संस्कार नहीं है तो बेटियां बाहर कैसे निकल पायेंगी? इसलिए सोशल वर्क के दौरान जहाँ भी ऐसी स्थिति दिखती है, हम वहाँ पहुंचते हैं, समझाते हैं कि ऐसा मत करो, बेटियों को पढ़ने दो। आगे बढ़ने दो। इन समस्याओं को हमें दूर करना ही होगा और ये युवा वर्ग ही इसको दूर करेगा।

आज कई विद्यार्थियों को 5–5, 6–6, 7–7 गोल्ड मेडल मिले हैं। उन्होंने परिश्रम किया है तभी उन्हें ये मेडल मिले हैं। प्रो0 डी0पी0 सिंह जी बता रहे थे कि बहन जी, इसमें सबसे ज्यादा तो बेटियाँ ही हैं तो मैंने उनसे कहा कि यह एक ही यूनिवर्सिटी में नहीं हैं सभी यूनिवर्सिटीज में 80 प्रतिशत गोल्ड मेडल बेटियाँ ही ले रही हैं। मुझे तो खुशी होगी ही क्योंकि मैं भी महिला हूँ। पढ़ते समय मुझे भी गोल्ड मेडल मिला था। लेकिन साथ–साथ मैं चिंता भी करती हूँ कि ऐसा असन्तुलन भी नहीं होना चाहिए। बेटियां आगे आयें और बेटे भी। अभी पी–एच0डी0 की बात हो रही थी तो मैं कुलपति जी से आग्रह करती हूँ कि वह अपनी में एक छात्र को इसी विषय पर पी–एच0डी0 करायें कि बेटियाँ क्यों आगे आ रही हैं और बेटे क्यों पीछे जा रहे हैं? कारण खोजिए और उसे दूर करने का प्रयास भी कीजिए। बेटियां रोटी बनाती हैं, भाई डाइनिंग टेबल पर बैठकर उसे खाता है पर रोटी बनाने वाली आगे हैं और तैयार भोजन खा लेने वाला पीछे रह जाता है। इसकी वजहें जाननी जरूरी हैं क्योंकि असन्तुलन अच्छा नहीं है।

मैं बहुत सारे जिलों में जाती हूँ जहाँ महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में काफी कम है पर पिछले 10 सालों में धीरे–धीरे ये महिलायें समाज के सभी क्षेत्रों में आगे आ रही हैं। कम पढ़ी लिखी महिलायें भी स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आगे बढ़ रही हैं। ये हमारे लिए बहुत खुशी की बात है। मैंने गुजरात में काम किया है। मध्य प्रदेश के कई जिलों में गयी। महिलाओं से मिली जो बहुत अच्छा काम कर रही हैं। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। किसी भी देश में यदि आधी आबादी देश के विकास में नहीं योगदान करती तो देश का विकास नहीं होगा। इसलिए नारी शक्ति को भी प्रोत्साहित करके उनका योगदान हमें प्राप्त करना चाहिए।

आज यहाँ स्वयं सहायता समूह की महिलायें भी आयी हैं। उन्हें भी मैं बहुत–बहुत बधाई देती हूँ। अनपढ़ महिलायें भी अब काम कर रही कमा रही हैं, कम्प्यूटर चला रही हैं। खुद कमाना अच्छी बात तो है ही, इससे भी ज्यादा खुशी की बात ये है कि विचारों में भी बदलाव आया है। इन महिलाओं से उनके बच्चों की पढ़ाई के बारे में पूछती हूँ तो वो बताती हैं कि हमने न पढ़ने की दिक्कते झेली हैं इसलिए बच्चों को पढ़ा रहे हैं, कालेज भेज रहे हैं। आज ये महिलायें बाहर भी जा रही हैं। अपने प्रोडक्ट बेचने के लिए तरीके सीख रही हैं, दिल्ली, मुम्बई और विदेश भी जा रही हैं। अंग्रेजी न जानने के बाद भी अपने आत्मविश्वास के बूते वहाँ भी सफलता पाकर लौटती हैं।

मित्रों! हमारे प्रधानमंत्री जी ने तीन–चार बाते हमारे सम्मुख रखी हैं। घर–घर टॉयलेट होना चाहिए। स्वच्छता होनी चाहिए। पूरा भारत इसमें सहयोग कर रहा है, जिसके अच्छे परिणाम भी मिल रहे हैं। अभी उन्होंने कहा

कि हमें वर्ष 2025 तक अपने देश को टी0बी0 की बीमारी से मुक्त करना है। हम सबको भी इस मुहिम में अपना योगदान करना चाहिए। मेरा आग्रह है कि यूनिवर्सिटी के सभी प्राध्यापक एक–एक कुपोषित बच्चे या टी0बी0 ग्रस्त बच्चे को गोद लें और 15 महीने तक उसकी देखभाल, इलाज, पोषण में सहयोग करें ताकि वह बच्चा रोगमुक्त हो जाये।

इसी तरह हमें प्लस्टिक मुक्त भारत के लिए भी आगे आना होगा। हम स्वयं निश्चय कर लें कि हम प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे। हम अपनी यूनिवर्सिटी को, अपने परिवार को प्लास्टिक के प्रयोग से मुक्त करा लें तो बाकी का काम तो सरकारें कर ही लेंगी।

पानी के बारे में भी हमें सोचना होगा। पानी नहीं होगा तो क्या होगा? हमारा यह भी कर्त्तव्य हम पानी बचायें। बारिश के पानी को इकट्ठा करें। ऐसी व्यवस्थायें यूनिवर्सिटी और कालेजों में, गांवों में भी होनी चाहिए ताकि हम पानी का सही उपयोग कर सकें और सिंचाई जैसी जरूरी कामों में भी इसका उपयोग हो सके।

मित्रों! पर्यावरण के क्षेत्र में भी कई महिलायें बहुत अच्छा काम कर रही हैं। मैं एक उदाहरण आपके सामने रखना चाहती हूँ। अभी राष्ट्रपति महोदय ने समाज में उल्लेखनीय योगदान करने वाले अनेक व्यक्तियों को पद्म पुरस्कारों से अलंकृत किया। मुझे इतनी खुशी हुई कि सचमुच कितने अच्छे लोगों का चयन किया गया। पहले के चयन पर मैं कुछ कहना नहीं चाहती। इस वर्ष झारखण्ड की एक महिला जमुदा टुडु को पद्श्री प्रदान किया गया। मैंने विस्तार से उनके बारे में पढ़ा। वह विवाह के बाद ससुराल में जहाँ आयीं

उस गाँव के सामने पहाड़ी पर घने पेड़ थे। रोज वह घर से देखती कि 8–10 लोग आते और पेड़ काटकर ले जाते। धीरे–धीरे पहाड़ी पर बहुत कम पेड़ रह गये। जमुना ने ये किया कि जैसे ही ये लोग पेड़ काटने आते, 4–5 महिलाओं के साथ लाठियां लेकर वहां पहुंच जाती। कई बार लड़ाई हुई। चोट खायी पर उन्हें भगा दिया। उन्होंने पुरुषों को भी समझाया कि अगर पेड़ नहीं बचे तो गांव भी नहीं बचेगा पर शुरू में किसी ने साथ नहीं दिया। मगर धीरे–धीरे 20–25 महिलायें जुटीं और उन्होंने कटे पेड़ों की जगह पर नये पौधे लगाने शुरू कर दिये। पौधे बड़े हुए तो पुरुषों ने भी सहयोग देना शुरू किया और धीरे–धीरे वहाँ का वातावरण और पर्यावरण दोनों अच्छा हो गया। उन्हें इस योगदान के लिए पदमश्री सम्मान दिया गया। अनपढ़–निरक्षर महिलायें भी पर्यावरण का, पानी का महत्व समझती हैं तो हमें भी, कालेजों और यूनिवर्सिटीज को भी ऐसे प्रयास करने चाहिए और जहाँ अच्छा काम हो रहा हो, वहाँ अपना सहयोग देना चाहिए।

आज जिन बच्चों ने गोल्ड मेडल हासिल किये और जो नहीं पा सके उनमें एक–एक अंक का अन्तर है। मन में इसे लेकर निराशा का भाव आ सकता है पर मैं कहती हूँ कि जिसे मेडल मिला, उनका भी अभिनन्दन और जिन्हें नहीं मिला, उनका भी अभिनन्दन। परिश्रम ही सफलता की चाभी है, परिश्रम करते रहो। अन्त में मैं एक और बात कहना चाहती हूँ। आपको गोल्ड मेडल मिला है। इसे आलमारी में रखोगे लेकिन याद रखिये बेटा। जब आपका विवाह हो तो किसी से गोल्ड मत मांगना। बस। वही सच्ची शिक्षा है। गोल्ड मेडल चाहे जितने प्राप्त कर लो लेकिन अपने विवाह में अगर किसी से

गोल्ड मांगते हो, पैसा–गाड़ी–बंगला मांगते हो तो आपके इस गोल्ड मेडल का कोई अर्थ नहीं है। आप अनपढ़ नहीं अनपढ़ से भी ज्यादा अनपढ़ हो।

जब आप अच्छाईयों को एक–एक करके अपने आचरण में लाते जायेंगे तो समाज में जितनी कुरीतियाँ हैं, अंधश्रद्धा है, वह सब धीरे–धीरे मिटता जायेगा और इसीलिए आज आप संकल्प करिये कि हम ऐसा कुछ भी नहीं करेंगे, जिसकी वजह से किसी बेटी को कुछ सहना पड़े। अच्छी तरह से पढ़िये, अच्छे ढ़ंग से विचार कीजिए। आपका जीवन उन्नत हो, प्रभावी हो, गौरवशाली हो और इसकी वजह से आपका घर उज्ज्वल बने, आपका परिवार उज्ज्वल बने। आपका गाँव आप पर गर्व करे। वहाँ के बच्चे और समाज देखें कि बच्चे ने कितनी अच्छी पढ़ाई की और कैसे आगे बढ़ रहा है।

एक आदर्श नागरिक के रूप में आप लगातार आगे बढ़ते रहो, यही मेरा उपदेश है।

धन्यवाद!